International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 7, November-December 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

केदारनाथ सिंह की कविताओं में जीजिविषा

डॉ कृष्णा देवी

हेड कांस्टेबल, कुवाटर न 22, न्यू पुलिस लाइन हिसार रोड़, फतेहाबाद

How to cite this paper:
Dr. Krishna Devi "Life in the Poems of Kedarnath Singh" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-7, December 2022, pp.63-64, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52271.pdf

IJTSRD52271

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

कवि कर्म अनुभवों का एक आभास निर्मित करता है। उसका लक्ष्य जीवन के एक हिस्से के रूप में भोगी और अनुभूत घटनाओं का आभासीकरण करना तथा एक शुद्ध और पूर्ण अनुभूत वास्तविकता को ठोस रूप प्रदान करना है ।

केदार जी के सम्पूर्ण काव्य संग्रह में ऐसा कुछ अक्सर मिलता है जो अदृश्य है, जो अस्पष्ट है जो गुजर रहा है या जिसकी झिलमिलाहट महसूस हो जाती है। शब्द योजना आत्ममुग्ध लेखन के खिलाफ आलोचनात्मक यथार्थवाद का उत्कृष्ट लेखन / निर्देशन है। कंदार जी की किसी भी कविता को पढ़े तो हम पाते हैं कि वे न तो शब्दों का अपव्यय करते हैं और न ही भावनाओं का हिन्दी में बहुत ही कम ऐसे कवि हैं जो मित्र कथन की कला में सिद्धहस्त हैं। कविता हर हाल में तमाम तरह के विश्लेषणों के बाद भी कविता की रहती है एक थरथराती हुई लय की तरह और कहना न होगा कि केदार जी की कविताएं आखिर में उसी तरह हमारे भीतर बची रह जाती है ।

"वह रोटी में नमक की तरह प्रवेश करता है
ताख पर रखी रात की रोटी
उसके आने की खुशी में
जना सी उछलती है
और .....
मुखे आदमी की नींद में गिर पड़ती है।" 1

"केदार जी की कविताओं में एक गतिशील स्थायित्व और गीतात्मकता है। उनमें एक सीमाबद्ध काव्यानुशासन है जिसका प्रभाव शब्दों के चयन और सीमित लयबद्धता में परिलक्षित होते है। केदारनाथ सिंह की हर कविता एक महत्वपूर्ण घटना है। इनकी कविताओं में जीवन का हल्का सा स्पन्दन भी रेखांकित हुआ है। उनकी चिन्ता में कम होते घोड़ों विस्मृति में जाते पक्षियों व्यस्तता में खोते जाते साथियों गति में अलग पड़े ट्रकों की स्मृति भी शामिल है। यथार्थ जगत ही दो स्थूल क्रियाओं के बीच अचानक एक सुरक्षित रह जाने वाला अन्तराल होता है।

केदार जी अक्सर यथार्थ जगत में ऐसे अन्तराल ढूंढ़ते हैं। जिस वस्तु को हम देखते ऊपर विगत का एक भयावह रूप लदा है। भविष्य में भी पुनः इस्तेमाल किये जाने की प्रक्रिया में उसका अर्थ संकुचन हो जायेगा। इन दोनों परिस्थितियों और सत्ता है जिसे कवि ढूंढ के बीच एक अपनी सारी सहजता के बावजूद न तो अनगढ़ है निकालता है। केदार जी नगरीय कवि हैं। उनमें सभी वि किसानी उसक से भरे जनपद हैं। हुए से अजीब दिखता है। रचनाकार और उनकी रचनाओं में परस्पर गहरा रिश्ता होता है कि बहुत गहरे और भावात्मक है। एक किस्म का विभाजन उनकी कविता में एक - दूसरे से अलग करना असम्भव है। केदार जी का व्यक्तित्व प्राय उनकी झलकता दीखता है और यह रूप उनकी सृजना में अपनी मानवीय प्रकट हुआ है। प्रत्येक कवि का अपना अलग व्यक्तित्व होता है और उसी के आधार पर वह अपने आस - पास की हर घटना पर अपने विचार रखता है। उसकी यही दृष्टि उसकी रचनाओं के लिए जमीन तैयार करती है। जीवन और जिजीविषा के प्रति जैसा लगाव कृति में होता है, उसकी कविताएं उसी प्रकार के सौन्दर्य बोध के साथ सूजित होती हैं।

हर कवि का अपना व्यक्तित्व है और यही व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित होता है प्राय उसकी कालजयी रचनाओं में केदार जी इसी धारा के कवि है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को अलग - अलग कर पाना मुश्किल है। इनकी रचनाएं सारी विदूपत्ताओं के चित्रण के बाद भी बचा रखती है थोड़ी सी आस्था, जिस पर टिक जाता है माझी का पुल या नदी की नाव।

"मैं खुद से पूछता हूँ
कौन बड़ा है
वह जो नदी पर खड़ा है मांझी का पुल
या यह जो टंगा है लोगों के अन्दर ।"2

केदार जी के सौन्दर्य की प्रक्रिया स्थिर और जड़ न होकर गत्यात्मक है। ये विचारों को जीवन के अनुभवों से समरस करके उन्हें ऐन्द्रिक बिम्बों में रूपान्तरित करना अच्छी तरह जानते हैं। वे भारतीय जीवन प्रणाली में उसके सहज रस - बोध को महसूस करते हैं। केदार जी की कविता सौन्दर्य बोध के सम्बद्ध में हिन्दी काव्य परम्परा में एक प्रकार प्रस्थान बिन्दु उपस्थित करती है। जीवन के अनुभवों में सुकुमारता के महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता किन्तु केवल कोमल और मधुर भाव में ही सौन्दर्य का वास पाना केदार जी की दृष्टि में अधूरा है। कविताएं सहचरी सी प्रतीत होती है यहीं कहीं हमारे पड़ोस की केदार जी की कविताओं में छुपा सौन्दर्य कुछ इस तरह है कि जैसे- गूंग करि

शरकरा | मिठास और शब्द दोनों दो अलग रहस्य की तरह इनकी कविताओं का सौन्दर्य हिन्दी आलोचना के लिए चुनौती है। कविताएं पाठक के साथ - साथ चलती हैं, कभी खामोशी के साथ कन्धे पर दोस्त की तरह सांत्वना भरा हाथ रखे हुए, कभी धीरे - धीरे बतियाते हुए। केदार जी की कविताएं हमारे लिए मूल्यवान है कि वे हमारे वक्त में सक्रिय एक ईमानदार कवि के संघर्ष को पारदर्शी रूप में दिखाती हैं। उन फिसलनों और भटकावों की खरोंचों को भी हम महसूस कर सकते हैं जो रास्ते में आये हैं इनके काव्य में खास कसैले स्वाद की कविताएं भी शामिल है जो किसी प्रतीक या बिम्ब के समीप खतरनाक ढंग से पहुँच कर वापस लौट आती है।

'धूप में घोड़े पर बहस ' एक ऐसी की कविता है। केदार जी की कविताओं में प्रेम एक पहाड़ी नदी की तरह आया है। तेज प्रवाह लेकिन इतना स्वच्छ और पारदर्शी कवि एक पूरा महाकाव्य लिख देता है बारिश की कुछ बूंदों से। परित्यक्त और निर्जीव चीजें कवि का स्पर्श पाते ही प्रकृति के सौन्दर्यतम प्रतिष्ठान में तब्दील हो जाती है। कुछ कविताए भीतर तक हिला देती है और इस कंपन को हम देर तक महसूस कर सकते हैं। जैसे दिया सिराया जाता है जैसी कविताएं अपने कथ्य के कारण रोक देती है वहीं जहाँ खड़ा है कवि एक मां से दूसरी माँ के कुशलक्षेम की याचना करता। 'मांझी का पुल' देर तक थरथराता है मन में कहीं। ' सूरज ' अपनी पूरी ताकत और उष्मा के बाद विवश नजर आता है कि उस पर रोटी नहीं सेकी जा सकती। सबसे विरल सौन्दर्य की हिंसा और आतंक का प्रतीक बाघ उदास हो जाता है थोड़ी सी आदमीयत पाने के लिए। उल्लास और शर्म से हो जाता है लाल ये सोचते हुए कि कभी बुढ़िया की बटुली में वह खुदबुदा रहा होगा। इतना अदभुत अविश्वसनीय लेकिन सरल कि इसे सच मान लने को जी चाहता है। कविताओं में कहीं द्वेष नहीं उस पानी के प्रति भी नहीं जिसमें सब कुछ गंवा चुके हैं लोग। केदार जी के समय काव्य को देखा जाय तो सौन्दर्य अपने उत्कृष्ट रूप में उपस्थित होता है। मानय सौन्दर्य की जो रूपरेखा कवि ने खींची है वह समस्त अभिप्रायों से मुक्त होती दिखती है। मानव होना यहाँ जीवित होने की कसौटी है। जङ- चेतन अर्थात् धरती पर उपस्थित हर चीज आदमीयत पाने के लिए लालायित है। एक अति सामान्य सी वस्तु में भी सौन्दर्य हो सकता है, यह केदार जी की कविताओं से स्पष्ट होता है।

"इसमें तुम्हें जंगली पत्तों की खुशबू
और जानवर के रोओं की गरमाहट मिलेगी
तुम्हें एक मजबूत पत्थर मिलेगा
जिस पर तुम बैठ सकते हो
पत्थर को छुआ
तुम्हें पानी का संगीत सुनाई पड़ेगा
और तुम पाओगे तुम उसकी नसों में
खून की तरह वह रहे हो
तुम बाहर निकलोगे और
तुम्हे सूरज मिल जायेगा।"3

एक सूक्ष्म दृष्टि यदि कविताओं के शिल्प पर डालें तो पाते हैं कि शब्दों का इतना अद्भुत संयोजन विरले ही मिलता है साहित्य में। यद्यपि ' बिम्ब केदार जी को प्रिय है परन्तु उन्होंने शब्दों के उचित प्रयोग से कविताओं को काव्यात्मक अलंकार से भी सुसज्जित किया है कल्पनाएं केदार जी का स्पर्श पाकर सजीव हो उठती है बिम्ब और कल्पना का अभूतपूर्व संयोजन दिखता है केदार जी के काव्य संकलन में।

यहाँ एक तुच्छ घास भी अपने कन्धों पर क्रान्ति का बोझ ढोती मिलती है। कीचड़ कृतज्ञ हो जाता है जीवन बचाने की मुहिम में अपने योगदान को देखकर अनाज मण्डी में जाने से इनकार कर देते हैं, आदिवासी पूरी हिकारत से देखता है बाजार को और निकल जाता है प्रकृति की ओर और शब्द पकने लगते हैं खेतों में जड़ों में महफूज रखकर अपनी गरिमामय सुगन्ध ।कविता खुशनुमा सुबह से शुरू होती हुई शाम तक स्तब्ध और गहरी उदासी से बेचैन कर देती है यह कहते हुए 'उस दिन वह खुश था ' (फसल)

इस शोध - प्रबन्ध में शोधार्थी ने प्रयास किया है कि केदारनाथ सिंह की कविताओं के सौन्दर्य को स्वयं की दृष्टि में परखने और अनुभव करने का ।अन्त में कवि की कविताओं के सौन्दर्यबोध के लिए कवि के ही शब्द -

"कविता को पढ़ना
जैसे पके ज्वार के
खेत से गुजरना
पूछना न जांचना
चढ़ना
न उतरना
बस उतरना
बस भरना.....
वैसे कोई डर ना
पर डरना भाई डरना
गिर न पड़े ऊपर कहीं कोई झरना ।"4

इतनी सरलता से कविता का मायने स्पष्ट करती यह पंक्तियों कवि की अनुभूतियों को बड़ी सहृदयता से पाठक तक पहुँचा देती है ।

सन्दर्भ सामग्री

[1] सिंह केदारनाथ प्रतिनिधि कविताएं पृ०-15
[2] सिंह केदारनाथ जमीन पक रही है पृ०-93
[3] सिंह केदारनाथ बाघ पृ०-11
[4] सिंह केदारनाथ सृष्टि पर पहरा पृ० - 17